दिनांक 20-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

शक्ति होते हुए भी जीवन में सफलता और सन्तुष्टता क्यों नहीं?
व
सारे कल्प में विशेष पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्माओं की विशेषताएँ

सागर समान अखण्ड अचल अटल बन जाओ
सामना करने और समाने की शक्ति जगाओ

ज्ञान योग से प्रीत के संग संग रीत भी निभाओ
समय प्रमाण ज्ञान और शक्ति उपयोग में लाओ

रीत निभाने के लिए निर्णय शक्ति को बढ़ाओ
निराकारी निर्विकारी और निरहंकारी बनते जाओ

निर्विकल्प अवस्था से बुद्धि को स्वच्छ बनाओ
सर्व गुणों में मास्टर सागर का अनुभव पाओ

बाप से हुई ईश्वरीय प्राप्तियाँ यूज करते जाओ
दान देकर तुम इनका खुद को स्वरूप बनाओ

सर्व प्रकार की विशेषता अपनी स्मृति में लाओ
श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा कहलाओ

दिव्य गुणों का प्रभाव औरों पर छोड़ते जाओ
श्रेष्ठ अवस्था द्वारा औरों के आकर्षण में आओ

सम्बन्ध सम्पर्क में आते सबको प्राप्ति कराओ
सर्व विशेषताओं का तुम स्वरूप बनते जाओ

सारे कल्प की विशेषताएं संगमयुग में भरना
अपनी सम्पूर्णता का तुम मिलकर रास करना

जीवन में सतोप्रधानता का सूर्योदय तुम करना
जागती ज्योत बनकर सदा लगन में मग्न रहना

सर्व के हाथों में अपना हाथ देकर चलते रहना
संस्कारों की सबसे ताल मिलाकर चलते रहना

भक्तपन के अंश और वंश को पूरा ही मिटाना
रास मण्डल के अन्दर हर एक से रास मिलाना